

MP BOARD CLASS 10 HINDI SPECIAL MODEL PAPER 3 WITH ANSWER

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनिए-

1. रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी कार्य स्थली बनाया-

(अ) सेवाग्राम (ब) कन्याकुमारी (स) शांति निकेतन (द) हरिद्वार

2. घनश्याम की बहन का क्या नाम था-

(अ) शारदा (ब) सुन्दरी (स) सरस्वती (द) श्यामा

3. शरीर को पुष्ट करता है-

(अ) गेहूँ (ब) गुलाब (स) गेंदा (द) इलायची

4. जायसी की भक्ति है-

(अ) कृष्णाश्रयी सगुण भक्ति। (ब) प्रेमाश्रयी भक्ति (स) रामाश्रयी सगुण भक्ति। (द) ज्ञानाश्रयी निर्गुण भक्ति

5. देवगढ़ के पुराने दीवान थे-

(अ) शिवसिंह (ब) अभयसिंह (स) सुजानसिंह (द) मोहनसिंह

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. है बिखेर देती मोती सबके सोने पर। (वसुन्धरा/धरती)

2. पवन जगावत आग को देह बुझाय। (बिजली/दीपहिं)

3. गुप्तजी की प्रमुख रचना है। (साकेत/दुर्गा)

4. बड़े घर की बेटा कहानी के लेखक हैं। (प्रेमचन्द/यशपाल)

5. दशरथ के बड़े पुत्र का नाम था। (राम/भरत)

प्रश्न 3. निम्नलिखित वाक्यों में सत्य/असत्य छाँटिए-

1. छायावाद के जनक महावीर प्रसाद द्विवेदी माने जाते हैं।

2. कबीर ने बाहरी आडम्बरों का समर्थन किया है।

3. 'सवैया' वर्णिक छंद है। <http://www.mpboardonline.com>

4. रोला और चौपाई के मेल से कुण्डलियाँ छन्द बनता है।

5. 'निन्दा रस' व्यंग्य निबन्ध है।

प्रश्न 4. सही जोड़ी का मिलान कीजिए-

(क)

(ख)

(1) दीपदान

(क) जयशंकर प्रसाद

(2) सुश्रुत संहिता

(ख) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(3) श्रद्धा

(ग) डॉ. रामकुमार वर्मा

(4) नीति अष्टक

(घ) मैं और मेरा देश

(5) कन्हैयालाल मिश्र

(ङ) शल्य चिकित्सा

प्रश्न 5. एक शब्द एक वाक्य में उत्तर दीजिए-

1. कवि ने हिमालय की झीलों में किसको तैरते देखा है?
2. बसंत के आने पर कौन तान भरने लगता है?
3. लोहा किसकी श्वांस से भस्म हो जाता है?
4. चर अचर किसमें निरत है?
5. नाटक सम्राट की उपाधि किसे प्राप्त है?

प्रश्न 6. उल्लाला को परिभाषित करते हुए उदाहरण दीजिए।

सभी दिशा क्या पूछ रही है?

प्रश्न 7. कबीर ईश्वर से क्या माँगते हैं?

अथवा चलने के पूर्व बटोही को क्या करना चाहिए?

प्रश्न 8. दो प्रमुख प्रगति कवियों के नाम एवं रचनाएँ लिखिए।

अथवा प्रयोगवाद की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न 9. दो प्रसाद युगीन एकांकीकारों के नाम व उनकी रचनाएँ लिखिए।

अथवा स्वातंत्र्येतर युग के एकांकियों की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न 10. परीक्षा कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करिये।

अथवा मोहन शिबू के विषय में क्यों चिंतित था? <http://www.mpboardonline.com>

प्रश्न 11. सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा की कौनकौन सी विधियों का वर्णन किया गया है?

अथवा ज्ञान और दीपक के आपसी सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 12. निम्न शब्दों में उपसर्ग प्रत्यय छांटिये।

(i) सुनील (ii) परलोक (iii) ऊधीर (iv) बेहाक (v) चतुराई।

अथवा निम्न शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

(i) गणेश (ii) जंगल, (iii) आकाश, (iv) अग्नि (v) नदी

प्रश्न 13. करुण रस की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

अथवा अनुप्रास अलंकार की परिभाषा लिखिए तथा उदाहरण भी दीजिए।

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किसी दो वाक्यों को शुद्ध कीजिए-

(i) आज से तुमने परिश्रम करना है। (ii) मैंने गाते हुए लता मंगेशकर कर देखा।

(iii) श्याम से सत्यता को पहचान लिया।

अथवा निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों का उत्तर एक शब्द में लिखिए-

(i) जो परीक्षा लेता है। (2) जो दूर की सोचता हो। (3) जिसे गोद लिया गया हो।

प्रश्न 15. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पदों का समास विग्रह समास का नाम लिखिए-

नवग्रह, चतुर्भुज, राजपुत्र, नीलकमल।

अथवा निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों का संधि विच्छेद कर नाम लिखिए-

(1) शिवालय (2) परमात्मा (3) नरेश (4) जगन्नाथ

प्रश्न 16. उभयालंकार की परिभाषा उदाहरण द्वारा दीजिए।

अथवा श्रृंगार रस को परिभाषित कीजिए तथा उदाहरण भी दीजिए।

प्रश्न 17. रिपोर्ताज क्या है? दो रिपोर्ताजकारों के नाम तथा उनकी रचनाएं लिखिए।

स्वातंत्र्येतर युग के कहानीकारों के नाम लिखिए।

प्रश्न 18. अभयसिंह के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

अथवा गेहूँ और गुलाब से मानव को क्या प्राप्त होता है?

प्रश्न 19. कवि पद्माकर के अनुसार 'वनो और बागों' में किसका विस्तार है?

अथवा 'नदी सभ्यता' कविता में कवि का नाम बताते हुए 'नयी सभ्यता के स्वरूप को बताइए।

प्रश्न 20. बसन्त ऋतु के आगमन पर प्रकृति में होने वाले कोई दो परिवर्तन लिखिए।

अथवा कवयित्री महादेवी वर्मा का 'चिर सजग' से क्या आशय है? लिखिए।

प्रश्न 21. महाकाव्य किसे कहते हैं? इसकी प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

अथवा खण्ड काव्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न 22. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ।

अथवा महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए।

(i) प्रमुख रचनाएँ (कोई 2), (ii) भावपक्ष, (iii) कलापक्ष

प्रश्न 23. सियारामशरण गुप्त या कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' को साहित्यिक परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर लिखिए-

(i) रचनाएँ, (ii) भाषा-शैली की विशेषताएँ

प्रश्न 24. निम्न पद्यांश की व्याख्या संदर्भ सहित करिये। या कि नव इंद्रनील लघु श्रृंग फोड़ कर धधक रही हो कांत, एक लघु ज्वालामुखी अचेत माधवी रजनी में अश्रांत। धिर रहे थे धुंधराले बाल अंस अवलंबित मुख के पास, नील घनशावक से सुकुमार सुधा भरने को विधु के पास। और उस मुख पर वह मुस्कान! रक्त किसलय पर ले विश्राम। अरुणकीएक किरण अम्लान अधिक अलसाई हो अभिराम।

अथवा

निजभाषा निज धरम, निज मान करम व्यौहार। सबै बढावहु बेगि मिलि, कहत पुकार-पुकार।

प्रश्न 25. नीचे दिये गये गद्यांशों में से किसी एक गद्यांश की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये।

"प्रेम का अनुशासन मानने का हाड़ा-वंश सदा तैयार है, शक्ति का नहीं। मेवाड़ के महाराणा को यदि अपने ही जाति-भाईयों पर अपनी तलवार आजमाने की इच्छा हुई है, तो उससे उन्हें कोई नहीं रोक सकता है। बूंदी स्वतंत्र राज्य है और स्वतंत्र रहकर वह महाराणाओं का आदर करता रह सकता है। अधीन होकर किसी की सेवा करना वह पसन्द नहीं करता।

अथवा

महाशय 'क' नास्तिक थे, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मन्दिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती थी। मि.ल' को किताबों से घृणा थी, परन्तु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रन्थ देखनेपढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम होता था। शर्माजी घड़ी रात से ही वेद-मंत्र पढ़ने लगते हैं और मौलवी साहब को नमाज और तलावत के सिवा कोई काम न था। लोग समझते थे कि एक महीने। का झंझट है किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है। लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है?

प्रश्न 26. निम्न गद्यांश को पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

'स्वतंत्र भारत का सम्पूर्ण दायित्व आज विद्यार्थियों के ही ऊपर है, क्योंकि आज जो विद्यार्थी हैं, वे कल स्वतंत्र भारत के नागरिक होंगे। भारत की उन्नति और उसका उत्थान उन्हीं की उन्नति और उत्थान पर निर्भर करता है। अतः विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने भावी जीवन का निर्माण सतर्कता और सावधानी के साथ करें। उन्हें प्रत्येक क्षण अपने राष्ट्र, अपने समाज, अपने धर्म, अपनी संस्कृति को अपनी आँखों के सामने रखना चाहिए, जिससे उनके जीवन में राष्ट्र को बल प्राप्त हो सके। जो विद्यार्थी राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अपने जीवन का निर्माण नहीं करते, वे राष्ट्र और समाज के लिए भार-स्वरूप हैं।"

प्रश्न (1) उक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। <http://www.mpboardonline.com>

(2) इस गद्यांश का सारांश लिखिए।

प्रश्न 27. नालियों की सफाई और कीटनाशक दवाओं का छिड़काव हेतु नगरपालिका को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

अथवा

वार्षिक परीक्षा की तैयारी का उल्लेख करते हुए 'पिताजी को पत्र लिखिए।

प्रश्न 28. (अ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में सारगर्भित निबन्ध लिखिए-

(i) समाचार पत्र,

(ii) विज्ञान के बढ़ते चरण,

(iii) वन संरक्षण,

(iv) खेल: जीवन के लिए आवश्यक,

(v) दहेज एक सामाजिक अभिशाप।

(ब) निम्नलिखित में से किसी एक विषय की रूपरेखा लिखिए-

(i) विद्यार्थी और अनुशासन, (ii) पुस्तकालय, (iii) विद्यालय का वार्षिकोत्सव

उत्तरमाला

उत्तर-1. (i) (ग), (ii) (स), (iii) (अ), (iv) (ख), (v) (स)।

उत्तर-2. (i) वसुन्धरा (ii) दीपहि, (iii) साकेत, (iv) प्रेमचन्द, (v) राम।

उत्तर-3. (i) असत्य, (ii) असत्य, (iii) सत्य, (iv) असत्य, (iv) सत्य।

उत्तर- 4. (1) (ग), (2) (ङ), (3) (क), (4) (ख), (5) (घ)।

प्रश्न 5. एक शब्द एक वाक्य में उत्तर दीजिए-

उत्तर- 1. हंसों को। 2. कोकिला। 3. मरी खाल (चमड़े की श्वास से)।

4. सांसारिक सुख-सुविधा व भोग विलास से। 5. जयशंकर प्रसाद।

प्रश्न 6. उल्लाला को परिभाषित करते हुए उदाहरण दीजिए।

उत्तर- उल्लाला छंद में चार चरण होते हैं। प्रथम चरण तथा तृतीय चरण में 15 मात्राएँ तथा द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में 13 मात्राएँ होती हैं। इसमें कुल 28 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण- करते अभिषेक पयोद है, बलिहारी इस वेष की। हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।

प्रश्न- सभी दिशा क्या पूछ रही है।

उत्तर- सभी दिशाएँ यह पूछ रही हैं कि बसन्त किस तरह होना चाहिए।

प्रश्न 7. कबीर ईश्वर से क्या माँगते हैं।

उत्तर- कबीर ईश्वर से कहते हैं कि हे! ईश्वर मुझे इतना देना, जिससे परिवार का गुजारा ठीक तरह से हो जाए और जब भी कोई अतिथि मेरे घर आए तो मैं उसका ठीक से आदर-सत्कार कर सकूँ। कबीर ने ईश्वर से सन्तोषरूपी धन माँगा है।

अथवा चलने के पूर्व बटोही को क्या करना चाहिए?

उत्तर- चलने से पहले बटोही को रास्ते की पहचान कर लेनी चाहिए।

प्रश्न 8. दो प्रमुख प्रयोगवादी कवियों के नाम एवं रचनाएँ लिखिए।

उत्तर- प्रमुख प्रयोगवादी कवि एवं उनकी रचनाएँ-

1. अज्ञेय- हरी घास पर क्षण भर

2. मुक्तिबोध- चाँद का मुँह टेढ़ा है, भूरी-भूरी खाक धूल।

3. धर्मवीर भारती- अंधायुग, कनुप्रिया, ठण्डा लोहा।

अथवा प्रयोगवाद की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- प्रगतिवादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. शोषकों के प्रति विद्रोह और शोषितों से सहानुभूतिमानव जीवन को महत्वपूर्ण मानकर उसे अर्थपूर्ण दृष्टि प्रदान की गई।

2. प्रतीकों की नवीनता- नए-नए भावों को नए-नए शिल्प विधानों में प्रस्तुत किया गया है।

3. क्षणवाद को महत्व- जीवन के प्रत्येक क्षण को महत्वपूर्ण मानकर जीवन की, एक-एक अनुभूति को कविता में स्थान प्रदान किया गया है। <http://www.mpboardonline.com>

प्रश्न 9. दो प्रसाद युगीन एकांकीकारों के नाम व उनकी रचनाएँ लिखिए।

उत्तर- प्रसाद युगीन प्रमुख एकांकी व एकांकीकारों के नाम निम्नलिखित हैं-

1. हरिकृष्ण शर्मा - 'बुढ़ऊ का ब्याह'

2. जी. पी. श्रीवास्तव - 'गड़बड़झाला'

3. सेठ गोविन्ददास - सूखे संतरे, हंगर-स्ट्राइक

3. प्रसादोत्तर युग- इस काल में एकांकी का यथार्थवादी रूप उभरकर सामने आया। युद्ध की विभीषिका, बंगाल

का अकाल आजादी की जंग ने कला को प्रभावित किया। एकांकी भी अछूता न था।

1. डॉ. रामकुमार वर्मा - दस मिनट, स्वर्ग का तारा

2. जगदीशचंद्र माथुर - भोर का तारा, खण्डहर

3. हरिकृष्ण प्रेमी - निष्ठुर न्याय

4. स्वातन्त्र्योत्तर युग - इस युग के एकांकी पर रेडियो का गहरा प्रभाव है। इस युग के एकांकीकारों का दृष्टिकोण बुद्धिवादी प्रगतिशील तत्वों से प्रभावित रहा इनकी रचनाओं में पूँजीवाद विरोध, वर्ग-संघर्ष, सड़ीगली रूढ़ियों के प्रति अनास्था, कृषक एवं मजदूर की दयनीय स्थिति के प्रति असंतोष और सुधारवादी दृष्टिकोण मिलता है। स्वातन्त्र्योत्तर युग के एकांकियों की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- स्वातन्त्र्योत्तर युग के एकांकियों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. इस युग के एकांकी पर रेडियो का गहरा प्रभाव है।

2. स्वातन्त्र्योत्तर युग एकांकियों का दृष्टिकोण बुद्धिवादी प्रगतिशील तत्वों से प्रभावित रहा।

3. स्वातन्त्र्योत्तर युग एकांकियों में पूँजीवाद विरोध, वर्गसंघर्ष, सड़ी-गली रूढ़ियों के प्रति अनास्था, कृषक एवं मजदूर की दयनीय स्थिति के प्रति असंतोष और सुधारवादी दृष्टिकोण मिलता है।

प्रश्न 10. परीक्षा कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध करिये।

उत्तर- इस कहानी में लेखक मुंशी प्रेमचन्द्र ने देवगढ़ रियासत पद के लिए आए हुए उम्मीदवारों के लिए एक चयन प्रक्रिया का स्वरूप प्रस्तुत किया है। इसमें दीवान सुजानसिंह ने आए हुए उम्मीदवारों की परीक्षा लेते हुए देवगढ़ रियासत पद के लिए एक ऐसे पुरुष का चयन किया जिसके हृदय में दया तथा आत्मबल था।

अथवा मोहन शिबू के विषय में क्यों चिंतित था?

उत्तर- मोहन अपने जवान लड़के शिबू की निश्चिंतता और उसकी घर के काम में रुचि न होने कारण चिंतित था।

प्रश्न 11. सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा की कौनकौन सी विधियों का वर्णन किया गया है?

उत्तर- शल्य कला का प्रारंभिक प्रशिक्षण देने के लिए वे अपने शिष्यों को कंद-मूल, फल, पेड़-पौधों की लताओं, पानी से भरी मशकों, चिकनी मिट्टी के ढाचों और मलमल से बने मानव-पुतलों पर निरन्तर अभ्यास

करवाते। चीरा कैसे लगाना है, उसे कितना लम्बा, कितना गहरा रखना है-इसका अभ्यास प्राप्त करने के लिए शिष्यों को ककड़ी, करेला, तरबूज जैसे फलों और सब्जियों पर कई-कई दिनों तक अभ्यास करना पड़ता था। किसी घाव की गहराई कैसे पहचानें और उसे भरने के लिए क्या-क्या तकनीक अपनाएँ इसका प्रशिक्षण दीमक खाई लकड़ी के द्वारा दिया जाता, जिससे कि शिक्षार्थी रुग्ण शरीर की स्थिति का सही अंदाजा लगा सकें। अभ्यास के दौरान कमल के फूल की डंडी, शिरा (रक्त वाहिनी) बन जाती, जिसे शिष्य को सूई द्वारा बेधना पड़ता था। इसी तरह टांका लगाने का प्रशिक्षण तरह-तरह के कपड़ों और चमड़े पर दिया जाता। खुरदुरा चमड़ा, जिस पर से बाल न हटाएँ गए हों, उस पर खुरचने की कला सिखाई जाती थी। पट्टी बांधने का ज्ञान देने के लिए मानव पुतलों का सहारा लिया जाता था।

अथवा ज्ञान और दीपक के आपसी सम्बंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पढ़ने-पढ़ाने का संबंध ज्ञान के प्रकाश से है और बुझे दीपक का संबंध अंधकार के प्रकाश से है। ज्ञान अंतर के अंधकार का हरण करता है तो मैं बाह्य अंधकार को दूर करता हूँ। फलतः हम दोनों ही सहकर्मी तो हैं। ही, आपस में भाई-भाई हैं। <http://www.mpboardonline.com>

प्रश्न 12. निम्न शब्दों में उपसर्ग प्रत्यय छांटिये।

उत्तर- (i) सुनील (ii) परलोक (iii) अधीर (iv) बेहाल (v) चतुराई।

सुनील - सु उपसर्ग

परलोक- पर उपसर्ग

अधीर - अ उपसर्ग

बेहाल - बे उपसर्ग

चतुराई - आई प्रत्यय।

अथवा निम्न शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

(i) गणेश, (ii) जंगल, (iii) आकाश, (iv) अग्नि (v) नदी

उत्तर-

गणेश - गजानन, विनायक

जंगल - वन, अरण्य, कानन, विपिन, अटवी

आकाश - गगन, नभ, व्योम, अंतरिक्ष, अनंत

अग्नि - आग, पावक, वन्हि, अनल, हुताशन

नदी - सरिता, निर्झरणी, तटिनी, तरंगिनी

प्रश्न 13. करुण रस की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

उत्तर- करुण रस- प्रिय व्यक्ति अथवा इष्ट वस्तु के नष्ट हो जाने से हृदय में उत्पन्न विषाद का भाव करुण-रस की अभिव्यक्ति करना है। उदाहरण- प्रिय वह मेरा प्राण प्यारा कहाँ है? दुःख जलनिधि में डूबी का सहारा कहाँ है? लख मुख जिसका मैं आज लौं जी सकी हूँ, वह हृदय हमारा नयन, तारा कहाँ है?

अथवा अनुप्रास अलंकार की परिभाषा लिखिए तथा उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर- अनुप्रास- जहाँ वर्षों की आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न हो (वर्ण की आवृत्ति) वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। उदाहरण- चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही थीं जल थल में। अनुप्रास के भेद- अनुप्रास अलंकार के पाँच भेद हैं-

1. छेकानुप्रास 2. वृत्यानुप्रास 3. लाटानुप्रास 4. श्रुत्यानुप्रास 5. अन्त्यानुप्रास।

प्रश्न 14. निम्नलिखित में से किसी दो वाक्यों को शुद्ध कीजिए-

(i) आज से तुमने परिश्रम करना है। (ii) मैंने गाते हुए लता मंगेशकर कर देखा।

(iii) श्याम से सत्यता को पहचान लिया।

उत्तर- (i) आज से तुम्हें परिश्रम करना है। (ii) मैंने लता मंगेशकर को गाते हुए देखा।

(iii) श्याम ने सत्य को पहचान लिया।

अथवा निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों का उत्तर एक शब्द में लिखिए-

(i) जो परीक्षा लेता है। (2) जो दूर की सोचता हो। (3) जिसे गोद लिया गया हो।

उत्तर- (1) परीक्षक (2) दूरदर्शी (3) दत्तक

प्रश्न 15. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पदों का समास विग्रह समास का नाम लिखिए नवग्रह, चतुर्भुज, राजपुत्र, नीलकमल।

उत्तर-

नवग्रह - नौ ग्रहों को समाहार (द्विगु)

चतुर्भुज - चार हैं भुजाएँ जिसकी (विष्णु) (बहुबीहि)

राजपुत्र - राजा का पुत्र, (तत्पुरुष)

नीलकमल - नीला है कमल जो (कर्मधारय)

अथवा निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों का संधि विच्छेद कर नाम लिखिए-

(1) शिवालय (2) परमात्मा (3) नरेश (4) जगन्नाथ।

उत्तर- 1. शिव + आलय = (स्वर संधि) 2. परम + आत्मा = (स्वर संधि)

3. नर + ईश = (स्वर संधि) 4. जगत् + नाथ = (व्यंजन)

प्रश्न 16. उभयालंकार की परिभाषा उदाहरण द्वारा दीजिए।

उत्तर- जहाँ शब्द और अर्थ दोनों के द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ उभयालंकार होता है।

अथवा श्रृंगार रस को परिभाषित कीजिए तथा उदाहरण भी दीजिए।

उत्तर- श्रृंगार रस- इसमें स्त्री-पुरुष के प्रेम का वर्णन होता है। इसके दो भेद हैं-

(अ) संयोग श्रृंगार (ब) वियोग श्रृंगार

(अ) संयोग श्रृंगार- जिस काव्य में नायक-नायिका के मिलने का वर्णन हो वहाँ संयोग श्रृंगार होता है।

उदाहरण- दूध दुहत अति ही रति बाढ़ी। एक धार दुहनी पहुँचावत, एक धार जहाँ प्यारी ठाढ़ी।

(ब) वियोग श्रृंगार-जिस काव्य में नायक-नायिका के मिलन के अभाव का चित्रण होता है, वहाँ वियोग श्रृंगार होता है। उदाहरण- हे खग, हे मृग, हे मधुकर श्रेणी, तुम देखी सीता मृग नयनी?

प्रश्न 17. रिपोर्टाज क्या है? दो रिपोर्टाजकारों के नाम तथा उनकी रचनाएं लिखिए।

उत्तर- रिपोर्टाज एक नवीन विधा है। रिपोर्टाज मूल रूप में फ्रेंच भाषा का शब्द है। रिपोर्टाज शब्द का अभिप्राय है, रोचक और भावात्मक चित्रण। हाल ही में घटी घटना तथा लेखक के द्वारा प्रत्यक्ष देखी गई घटनाओं का अतरंग अनुभव के साथ किया गया वर्णन रिपोर्टाज है; अंग्रेजी में इसी से मिलता-जुलता शब्द रिपोर्ट है, जिसका अभिप्राय है, किसी विषय का यथातथ्य विवरण, जबकि रिपोर्टाज में लेखक किसी घटना की रिपोर्ट तैयार करता है।

1. भदन्त आनन्द - देश की मिट्टी बोलाती है कौसल्यान कृत
2. धर्मवार भारती कृत - युद्ध यात्रा।
3. निर्मला वर्मा का - चीड़ो पर चाँदनी
4. शंकर दयालसिंह - युद्ध के चौराहे तक

अथवा प्रेमचंद युगीन कहानी व उनके कहानीकारों के नाम लिखिए?

उत्तर- प्रेमचंद युगीन कहानी व उनके कहानीकारों के नाम निम्नलिखित हैं-

1. प्रेमचंद - बूढ़ी काकी, ईदगाह, पूस की रात
2. जयशंकर प्रसाद - आकाशदीप
3. सुदर्शन - हार की जीत
4. विश्वम्भरनाथ कौशिक - ताई
5. आचार्य चतुरसेन शास्त्री - दुखवा में कासे कूँ, मोरी सजनी

3. प्रेमचंदोत्तर युग- प्रेमचंदोत्तर युग कविता एवं कहानी की केन्द्रित विधा का युग है। यशपाल, अज्ञेय, अमृतराय, भैरवप्रसाद गुप्त, इलाचंद्र जोशी, विष्णु प्रभाकर आदि विभिन्न भावधाराओं का प्रतिनिधित्व करने वाले कथाकारों की रचनाओं ने इस युग को प्रभावित किया।

प्रश्न 18. अभयसिंह के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- अभयसिंह की चरित्रगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. अभयसिंह का मानना था कि अनुशासन के अभाव में हमारे देश के टुकड़े हो रहे हैं।
2. अभयसिंह राजपूतों को एक सूत्र में बाँधना चाहते थे। महाराणा लाखा की चरित्रगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं
अथवा गेहूँ और गुलाब से मानव को क्या प्राप्त होता है।

उत्तर- गेहूँ हम खाते हैं, और गुलाब सँघते हैं। एक से शरीर की पुष्टि होती है और दूसरे से मानस तृप्त होता है। गेहूँ प्रबल है, वह बहुत दिनों तक हमें शरीर को गुलाम बना कर रखना चाहेगा। गुलाब रंग में, सुगंध में, नृत्य में और गीत में है।

प्रश्न 19. कवि पद्माकर के अनुसार 'वनों और बागों' में किसका विस्तार है?

उत्तर- कवि के अनुसार वनों और बागों में बसन्त ऋतु के प्राकृतिक सौन्दर्य का मनमोहक विस्तार है।

अथवा 'नयी सभ्यता' कविता में कवि का नाम बताते हुए 'नयी सभ्यता के स्वरूप को बताइये।

उत्तर- 'नई सभ्यता' कविता के कवि अभिमन्यु अनंत हैं। कवि ने बताया कि नई सभ्यता में परम्पराएँ टूट रही हैं।

प्रश्न 20. बसन्त ऋतु के आगमन पर प्रकृति में होने वाले कोई दो परिवर्तन लिखिए।

कवि के अनुसार बसन्त ऋतु का मनमोहक प्राकृतिक वातावरण नदियों के किनारे, खेलों के मैदानों, मनोरंजन स्थलों, कछारों, कुन्जों, क्यारियों और सुन्दर कलियों में किलकारी मारता-हँसता-सा लगता है। इस ऋतु के आगमन से धरती पर सभी दिशाओं में फूल खिलने लगते हैं, इनके पराग कणों और उनकी सुगन्धित हवा में मौसम का अहसास हो जाता है। पेड़-पौधों पर नए पत्ते आने लगे हैं। कोयल के चहकने और टेसू (पलाश) के फूलों से मौसम में और निखार आ गया है। कवि कहता है कि लोगों के घरों के दरवाजों, दिशाओं, देश-विदेश और कई द्वीपों में बसन्त का अहसास हो रहा है। चाहे गलियाँ हों, चाहे ब्रजमण्डल, चाहे नवयुवतियाँ हों। लताएँ हों जंगल या बगीचे चारों दिशाएँ बसन्त की घटा से आच्छादित हैं।

अथवा कवयित्री महादेवी वर्मा का 'चिर सजग' से क्या आशय है? लिखिए।

उत्तर- कवि ने 'चिर-सजग' को मानवीय चेतना और जीवन दर्शन के सम्बन्ध में बताया है। उसका मानना है। कि आधुनिक भौतिक सुख-सुविधाओं के पर्दों ने व्यक्ति की चेतना और जागृति को पथभ्रष्ट कर दिया है। जबकि हमारी संस्कृति हमेशा चैतन्य तथा जागृत रहने की ही प्रेरणा देती है।

प्रश्न 21. महाकाव्य किसे कहते हैं? महाकाव्य की विशेषताएँ क्या हैं? <http://www.mpboardonline.com>

उत्तर- महाकाव्य- महाकाव्य में किसी पौराणिक या ऐतिहासिक विशिष्ट व्यक्ति का संपूर्ण जीवन चरित्र वर्णित होता है। इसका उद्देश्य महान रहता है।

महाकाव्य ऐसी छन्दोबद्ध कथात्मक रचना होती है, जिसमें संपूर्ण युग का चित्रण महान उद्देश्य से प्रेरित होकर गरिमामयी शैली में प्रभाव अन्विति के साथ किया जाता है।”

प्रश्न- खण्ड काव्य की प्रमुख विशेषताएँ कौन-कौनसी

उत्तर- खण्ड काव्य की विशेषताएँ-

1. खण्ड काव्य में जीवन की किसी एक घटना अथवा मानव जीवन के एक पक्ष का वर्णन होता है।
2. खण्ड काव्य में किसी एक घटना के माध्यम से किसी महान आदर्श की अभिव्यक्ति होती है।
3. खण्डकाव्य का नायक इतिहास प्रसिद्ध होता है।
4. इसकी कथावस्तु पौराणिक अथवा ऐतिहासिक विषयों पर आधारित होती है।
5. खण्ड काव्य में प्रधान रस शृंगार, शांत और वीर रस होता है। केवल एक ही रस का प्रयोग होता है।

प्रश्न 22. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अथवा महादेवी वर्मा की काव्यगत विशेषताएँ निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर लिखिए-

(i) प्रमुख रचनाएँ, (कोई 2) (ii) भावपक्ष, (iii) कलापक्ष

उत्तर-

*** भारतेन्दु हरिश्चंद्र-**

रचनाएँ- भारतेन्दु हरिश्चंद्रजी की रचनाएँ निम्नलिखित हैं।

- (1) कविवचन सुधा, (2) हरिश्चंद्र चंद्रिका, (3) निवेदिता तथा बाल-बोधिनी, (4) चंद्रावलि नाटिका, (5) विषस्य विषमौधनम्, (6) भारत दुर्दशा, (7) अंधेरी नगरी, (8) पूर्ण प्रकाश, (9) चंद्रप्रभा, (10) प्रेमतरंग।

काव्यगत विशेषताएँ-

भावपक्ष- वे पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण, हिन्दी के प्रति उदासीनता और भारतीय जीवन की बुराइयों के प्रबल विरोधी, देशभक्त कवि थे।

कलापक्ष- भारतेन्दुजी का काव्य क्षेत्र व्यापक है। भक्ति और श्रृंगार आपकी कविता का प्रधान रस है।

भावप्रबलता, देश और समाज-सुधार का स्वर आपकी रचनाओं में बहुत सशक्त है। आपका श्रृंगार रीतिकालीन कवियों से भिन्न एवं शिष्ट है। राष्ट्र प्रेम भावे आपके हृदय सिंधु में हिलोरे मारता है, आपकी रचनाएँ छंदबद्ध हैं। छप्पय, कुण्डलियाँ, शार्दूलविक्रीडित, हरिगीतिका आदि अनेक छंदों का प्रयोग आपकी रचनाओं में हुआ है। आपने लोकछंदों-लावनी, खयाल और कजरी का भी उपयोग किया है। काव्य भाषा ब्रज है, किन्तु शनैः-शनैः आपने खड़ी बोली काव्य को जन्म दिया, सजाया और सँवारा है। लोकोक्तियों और मुहावरों का यथास्थान प्रयोग कर अलंकारिक शैली को अपनाया है। उपमा, रूपक, अनुप्रास और श्लेष आपके प्रिय अलंकार हैं। साहित्य में स्थान- भारतेन्दुजी युगांतकारी रचनाकार थे। हिन्दी उन्नायकों में आपका स्थान सर्वोच्च है।

*** महादेवी वर्मा**

रचनाएँ- महादेवी वर्मा की प्रमुख निम्नलिखित रचनाएँ हैं- <http://www.mpboardonline.com>

- (1) स्मृति की रेखाएँ, (2) अतीत के चलचित्र, (3) श्रृंखला की कड़ियाँ, (4) पथ का साथी, (5) मेरा परिवार, (6) क्षणदा, (7) नीहार, (8) नीरजा, (9) सांध्यगीत, (10) दीपशिखा, (11) यामा

काव्यगत विशेषताएँ-

प्राचीन भारतीय साहित्य दर्शन तथा संतयुग के रहस्यवाद के प्रभाव के फलस्वरूप आपकी काव्याभिव्यक्ति शत्रुतिशत भारतीय परम्परा की अनुगामी रही। वेदना की एकांत साधिका होने के कारण आपकी रचनाओं में वेदना का मधुर-रस समरसता का आधार बनकर प्रकट होता है। साहित्य में स्थान- यामा काव्य पर महादेवी वर्मा को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। भारत सरकार द्वारा आप पद्म विभूषण की उपाधि से सम्मानित की गयीं।

प्रश्न 23. सियाराम शरण गुप्त या कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का साहित्यिक परिचय निम्न बिन्दुओं के आधार पर लिखिए- (i) रचनाएँ, (ii) भाषा-शैली की विशेषताएँ

उत्तर -

सियाराम शरण गुप्त रचनाएँ-

सियाराम शरण गुप्तजी की प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं

काव्य- आर्द्रा, विषाद, मौर्य विजय, अनाथ, नकुल, पाथेय, दूर्वादल, आत्मोत्सर्ग आदि।

नाटक- पुण्यपर्व। उपन्यास- अंतिम आकांक्षा, नारी और गोद। निबंध संग्रह- झूठ-सच।

कहानी संग्रह- मानुषी।

भाषा-शैली- लेखक के सरल व्यक्तित्व की तरह ही उनकी रचनाओं की विषय-वस्तु और भाषा शैली सरल है। गुप्तजी की भाषा सरल, सुस्पष्ट और परिष्कृत है। बीच-बीच में मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सजीवता और रोचकता आ गई है। शैली भी सरल, परिमार्जित और स्वाभाविक है।

साहित्य में स्थान- हिन्दी साहित्य जगत में गुप्तजी केवल कवि नहीं हैं, उनके नाटकों, निबंधों, उपन्यासों और कहानियों में सात्विक उज्ज्वलता के दर्शन होते हैं। हिन्दी साहित्य जगत में उनका अविस्मरणीय स्थान है।

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

प्रमुख रचनाएँ-निबंध- "जिंदगी मुस्कराई", "माटी हो गई सोना",

बाजे पायलिया के मुँघरू", "दीप जले शंख बजे रिपोर्ताज- "क्षण बोले कब मुस्कराए" लघु कथा संग्रह- "धरती के फूल भाषा शैली- मिश्रजी ने गंभीर विषयों को सरल और सरस शैली में लिखा। रिपोर्ताज लेखन में वे सिद्धहस्त थे। उनकी रचनाएँ पाठकों को सहज ही आकर्षित करती हैं। मिश्रजी ने सरल और सहज भाषा का प्रयोग किया है एवं अनुशासित प्रयोग हुआ है। साहित्य में स्थान- मिश्रजी गांधीवादी थे। प्रभाकरजी ने अपने वैयक्तिक स्नेह और सामर्थ्य से हिन्दी के अनेक लेखकों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया। आपका स्थान हिन्दी साहित्य के अग्रणी साहित्यकारों में है।

प्रश्न 24. निम्न पद्यांश की व्याख्या संदर्भ सहित करिये।

या कि नव इंद्रनील लघु श्रृंग फोड़ कर धधक रही हो कांत, एक लघु ज्वालामुखी अचेत माधवी रजनी में अश्रांत। घिर रहे थे धुंधराले बाल अंस अवलंबित मुख के पास, नील घनशावक से सुकुमार सुधा भरने को विधु के पास। और उस मुख पर वह मुस्कान!रक्त किसलय पर ले विश्राम। अरुण की एक किरण अम्लान अधिक अलसाई हो अभिराम।

सन्दर्भ- पाठ श्रद्धा, कवि-जयशंकर प्रसाद

प्रसंग- प्रस्तुत पद्य में श्रद्धा के रूप सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- श्रद्धा का रूप ऐसा दैदीप्यमान हो रहा था, मानों धरती से ज्वालामुखी निकल रहा हो। श्रद्धा के सुन्दर मुख के पास उसके कंधों का आश्रय लिए घने, धुंधराले काले बाल सुशोभित हो रहे थे। उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे नीले रंग के लघु सुकुमार मेघ अमृत भरने के लिए चन्द्रमा के पास आए हो। श्रद्धा के प्रफुल्लिते मुख के ओठों के बीच उसकी मुस्कराहट इस प्रकार भली लगती थी, जैसे उगते हुए सूरज की प्रेमासिक्त लालिमा लिए हुए उज्ज्वल किरण शक्तिमय किसलय पर, आलस्य से डूबी हुई अँगड़ाई लेते हुए विश्राम कर रही हो। <http://www.mpboardonline.com>

अथवा निजभाषा निज धरम, निज मान करम व्यौहार। सबै बढावहु बेगि मिलि, कहत पुकार-पुकार।

सन्दर्भ- उपरोक्त पंक्तियाँ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा रचित नीति-अष्टक से ली गई है।

प्रसंग- अपनी मातृभाषा और अपना धर्म ही सुख देने वाले हैं।

व्याख्या- अपनी भाषा, धर्म, मान और कर्म आदि सुख देने वाले होते हैं। इन्हें बढ़ावा देने से शीघ्र ही सुख मिलता है।

प्रश्न 25. नीचे दिये गये प्रश्नों में से किसी एक गद्यांश की संदर्भ प्रसंग सहित व्याख्या कीजिये।

‘प्रेम का अनुशासन मानने का हाड़ा-वंश सदा तैयार है, शक्ति का नहीं। मेवाड़ के महाराणा को यदि अपने ही जाति-भाईयों पर अपनी तलवार आजमाने की इच्छा हुई है, तो उससे उन्हें कोई नहीं रोक सकता है। बूंदी स्वतंत्र राज्य है और स्वतंत्र रहकर वह महाराणाओं का आदर करता रह सकता है। अधीन होकर किसी की सेवा करना वह पसन्द नहीं करता।”

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश सुप्रसिद्ध नाटककार श्री हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा लिखित 'मातृभूमि का मान' शीर्षक एकांकी नाटक से अवतरित है।

प्रसंग- इस गद्यांश में बताया गया है कि मेवाड़ नरेश महाराणा लाखा ने सेनापति अभयसिंह के माध्यम से बूंदी के राव हेमू के पास प्रस्ताव भेजा कि वह मेवाड़ की अधीनता स्वीकार कर ले। इसके प्रत्युत्तर में राव हेमू ने स्पष्ट शब्दों में कह भिजवाया-

व्याख्या- स्वाभिमानी राजपूत को अपनी ताकत पर नाज होता है। वह किसी की अधीनता या बंधन को स्वीकार नहीं करता है। हाड़ा-वंश के लोग प्रेम का अनुशासन मानने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। वे किसी के ऊपरी दबाव या शक्ति को स्वीकार नहीं करते हैं। मेवाड़ के महाराणा लाखा का यदि अपनी ही जाति के लोगों पर अपनी शक्ति का परीक्षण करने की इच्छा हुई है, तो इस कार्य में उन्हें कोई भी बाधा नहीं डालेगा। बूंदी हमेशा से स्वतंत्र राज्य रहा है। भविष्य में भी वह स्वतन्त्र रहना चाहेगा। स्वतंत्र रहकर ही वह महाराणाओं का आदर कर सकता है। बूंदी किसी के अधीन रहकर किसी की सेवा करना पसन्द नहीं करता है।

विशेष- (1) यहाँ पर राव हेमू को एक स्वाधीनता प्रेमी और स्वाभिमानी शासक के रूप में चित्रित किया गया है।

अथवा

महाशय 'क' नास्तिक थे, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मन्दिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती थी। मि. 'ल' को किताबों से घृणा थी, परन्तु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रन्थ देखनेपढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वह नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम होता था। शर्माजी घड़ी रात से ही वेद-मंत्र पढ़ने लगते थे और मौलवी साहब को नमाज और तलावत के सिवा कोई काम न था। लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है। किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है। लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है।

सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के 'परीक्षा नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक श्री प्रेमचन्द हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्यांश में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि दीवान पद के उम्मीदवार के चयन की प्रक्रिया में जो लोग आए थे, वे दिखावटी आचरण करने वाले थे।

व्याख्या- यहां बताया गया है कि दीवान पद के उम्मीदवार कथनी-करनी में बहुत अन्तर रख रहे थे। मिस्टर 'ल' किताबों से घृणा करते थे लेकिन देवगढ़ के दीवान पद पर नियुक्त होने के लिए ये बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ने लगे। जो बुरी प्रवृत्ति वाले लोग थे, वे भी ऐसे दिखा देने लगे, मानो वे देवताओं के समान अच्छे गुण वाले हों। शर्माजी दिन निकलने का भी इन्तजार नहीं करते थे और रात से ही मन्त्रों का जाप करना शुरू कर देते थे। मौलवी साहब को देखकर ऐसा प्रतीत होता था, जैसे नमाज के अलावा उनके पास कोई कार्य करने को नहीं है। इस प्रकार के व्यवहार का एक कारण था कि लोग यह सोचते थे कि अब जितना अच्छा बन सकते हैं बन लें, एक महीने की अवधि में ही सब कार्य निपट जाना है। यदि एक बार दीवान पद पर नियुक्त हो जाये तो कौन पूछता है कि तुम्हारा व्यवहार कैसा है

अथवा

तुम्हारे आचार-विचार किस प्रकार के हैं। लेकिन सरदार सुजानसिंह ने चालीस वर्षों तक रियासत के दीवान-पद को सुशोभित किया था, जिस प्रकार जौहरी विभिन्न प्रकार के पत्थरों को देखकर बता सकता है कि 'हीरा' कौन सा है, ठीक उसी प्रकार वर्तमान दीवान सरदार सुजानसिंह सभी प्रत्याशियों को परख रहे थे। वे बनावटी व्यवहार करने वाले बगुलों के मध्य में छिपे हुए हंस को पहचानने का प्रयास कर रहे थे। विशेष- (1) दोहरे चरित्र के लोगों की स्थिति का सटीक वर्णन हुआ है। (2) सरल, सुबोध तथा विषयानुरूप खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। (3) वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

प्रश्न 26. निम्न अपठित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

“स्वतंत्र भारत का सम्पूर्ण दायित्व आज विद्यार्थियों के ही ऊपर है, क्योंकि आज जो विद्यार्थी हैं, वे कल स्वतंत्र भारत के नागरिक होंगे। भारत की उन्नति और उसका उत्थान उन्हीं की उन्नति और उत्थान पर निर्भर करता है। अतः विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने भावी जीवन का निर्माण सतर्कता और सावधानी के साथ करें। उन्हें प्रत्येक क्षण अपने राष्ट्र, अपने समाज, अपने धर्म, अपनी संस्कृति को अपनी आँखों के सामने रखना चाहिए, जिससे उनके जीवन में राष्ट्र को बल प्राप्त हो सके। जो विद्यार्थी राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अपने जीवन का निर्माण नहीं करते, वे राष्ट्र और समाज के लिए भार-स्वरूप हैं।”

प्रश्न (1) उक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए। (2) इस गद्यांश का सारांश लिखिए।

उत्तर- शीर्षक- विद्यार्थी राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनायें।

2. सारांश- स्वतंत्र भारत की उन्नति छात्रों के चरित्रनिर्माण और उत्थान पर निर्भर है। छात्रों को अपना चरित्र-निर्माण राष्ट्र, धर्म, संस्कृति के अनुरूप करना चाहिए, ताकि राष्ट्र उनसे शक्ति पा सके। राष्ट्रीय दृष्टि विहीन छात्र समाज पर बोझ हैं। <http://www.mpboardonline.com>

प्रश्न 27. नालियों की सफाई और कीटनाशक दवाओं का छिड़काव हेतु नगरपालिका को प्रार्थना-पत्र लिखिए।

प्रति,

माननीय अध्यक्ष महोदय

नगर पालिका सांवेर

सांवेर (इन्दौर)

विषय- नालियों की सफाई और कीटनाशक छिड़काव हेतु।

महोदय,

उपयुक्त विषयान्तर्गत हम सभी विजयनगर निवासी वार्ड क्र. 09 सविनय प्रार्थना करते हैं कि सफाई व्यवस्था पूरे महीने भर से वार्ड में नहीं हो पा रही है। नालियों में गन्दगी बढ़ रही है। जिससे मच्छरों का प्रकोप बढ़ रहा है। डेंगू और बीमारियाँ फैलने की आशंका बढ़ गई है। सफाई कर्मचारी भी अनियमित रहते हैं।

श्रीमान् से विनम्र अनुरोध है कि मोहल्ले की नालियों की नियमित सफाई का प्रबन्धन करें, ताकि वार्ड वासी चैन से अपना जीवनयापन कर सकें, साथ ही कीटनाशक दवाओं का छिड़काव भी किया जाए ताकि रोग न फैले।

धन्यवाद

दिनांक.....

विनीत

सभी वार्ड 'निवासी

वार्ड क्र. 9 विजयनगर सांवेर

अथवा

वार्षिक परीक्षा की तैयारी का उल्लेख करते हुए पिताजी को पत्र लिखिए।

उत्तर-

33 संत कबीर पथ

दिनांक

“निर्मल

उदय' भोपाल

आदरणीय पिताजी,

सादर चरण-स्पर्श।

मैं यहाँ स्वस्थ हूँ, मेरी परीक्षा करीब है। यद्यपि मैंने सभी विषयों की तैयारी पूर्ण कर रखी है, फिर भी अंग्रेजी एवं गणित की पुस्तकें मेरे पास नहीं हैं तथा इन विषयों का पाठ्यक्रम भी अभी कक्षा में नहीं पढ़ाया गया है-इसी कारण थोड़ी सी कठिनाई अनुभव हो रही है।

इन सभी बातों के उपरांत भी मैं अध्ययन से पूर्णतया संतुष्ट हूँ। विश्वास है कि इस वर्ष भी मैं पूर्व की भाँति प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो जाऊँगा। पूजनीय माताजी को चरण-स्पर्श, गुड्डी और बबलू को स्नेह।

शेष कुशल

आपका

संदीप पाटिल

प्रश्न 28. (अ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में सारगर्भित निबन्ध लिखिए-

(i) समाचार पत्र, (ii) विज्ञान के बढ़ते चरण, (iii) वन संरक्षण,

(iv) खेल: जीवन के लिए आवश्यक, (v) दहेज एक सामाजिक अभिशाप।

उत्तर-

समाचार-पत्र

प्रस्तावना- जैसे ही प्रातः काल का शुभारम्भ होता है, समाचार-पत्र बेचने वाले समाचार के प्रमुख तथा मुख्य शीर्षक को दुहराते हुए दिखाई पड़ते हैं। समाचार पत्र में विश्व के समाचार पढ़कर हम समस्त विश्व के साथ सम्बद्ध हो जाते हैं। आज के व्यस्त जीवन में समाचारपत्र सभ्य एवं सुसंस्कृत मानव के जीवन का अपरिहार्य अंग बन गया है। पौ फटते ही मनुष्य इन्हें पढ़ने के लिए व्यग्र हो उठता है। जैसे ही अखबार

घर में आता है, परिवार का प्रत्येक सदस्य यह प्रयास करता है कि समाचार-पत्र सबसे प्रथम उसे ही पढ़ने के लिए मिले। <http://www.mpboardonline.com>

इतिहास- समाचार-पत्र का प्रचलन इटली के वेनिस नगर में तेरहवीं शताब्दी में हुआ। सत्रहवीं सदी के आस-पास इसका इंग्लैण्ड में व्यापक रूप से प्रचार एवं प्रसार हुआ। ऐसा कोई भी नगर नहीं है, जहाँ से कोई न कोई समाचार-पत्र न निकलता हो।

विभिन्न व्यक्तियों को लाभ- बेरोजगार युवक रोजगार के विषय में, खिलाड़ी खेल के विषय में, नेता राजनीतिक हलचल के संदर्भ में, व्यापारी वस्तुओं के भावों, विवाह के इच्छुक वैवाहिक विज्ञापन, सिनेमा प्रेमी नयी-नयी फिल्मों की सूचना समाचार-पत्र के माध्यम से ही ज्ञात करते हैं।

समाचार-पत्रों का महत्व- आज समाचार-पत्रों की महती आवश्यकता है। ये प्रत्येक राष्ट्र की निधि हैं। लोग जब तक समाचार-पत्र के शीर्षकों पर निगाह नहीं डाल लेते, तब तक चारपाई पर ही लेटे रहते हैं। आज अंग्रेजी के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं में भी अखबार प्रकाशित हो रहे हैं। उन सब में हिन्दी के समाचार-पत्र सबसे अधिक प्रकाशित हो रहे हैं। आज विश्व की परिस्थिति निरन्तर जटिल होती चली जा रही है। जीवन संघर्षमय हो गया है, राजनीतिक गतिविधियाँ प्रतिपल नया रंग दिखा रही हैं, ऐसे में समाचार-पत्रों के माध्यम से हम इनके विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इन सब बातों के कारण समाचार-पत्र जीवन का अविभाज्य अंग बन गए हैं। इनके अभाव में ज्ञान का क्षेत्र अधूरा प्रतीत होता है। सम्पादक का दायित्व- सम्पादकों की समाचार के प्रकाशन में महती भूमिका होती है। वे महत्वपूर्ण घटनाओं का चयन करके उन्हें समाचार-पत्रों में प्रकाशित करते हैं। इस चयन पर ही समाचार-पत्रों की उपयोगिता आधारित है। सम्पादकीय टिप्पणी पढ़कर ही किसी समाचार-पत्र का स्तर निर्धारित होता है। इसमें राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को प्रकाश में लाया जाता है।

समाचार-पत्र प्रकाशन के आज के साधन- अखबार प्रकाशन के लिए आफसेट मशीनें प्रयुक्त होने लगी हैं। उसमें समय की बचत होने के साथ ही अधिक मात्रा में समाचार-पत्रों का प्रकाशन सम्भव होता है। STD, PCO एक स्थान से दूसरे स्थान तक के समाचारों को अविलम्ब पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। आज हैण्ड कम्पोजिंग के स्थान पर कम्प्यूटर को प्रयोग में लाया जाता है। इससे समाचार-पत्रों का प्रकाशन सुलभ एवं सस्ता हो गया है।

ज्ञान के प्रचारक एवं प्रमुख वाहक- समाचार-पत्र ज्ञान के प्रचार एवं प्रसार में एक वाहक के सदृश महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। समाचार-पत्र के रविवारीय अंक के समाचार एवं लेख पाठकों के ज्ञान का विस्तार करते हैं। इनमें फिल्मी कलाकारों से लेकर कविता, व्यंग्यपूर्ण लेख काम से बोझिल तथा थके-हारे मानवों को जीवन में एक नई प्रेरणा देते हैं। समाज सुधारकों के विचार समाज को जाग्रत करने वाले होते हैं। देश के कर्णधारों के आदर्शों से प्रभावित होकर जन-सामान्य उनका अनुगमन करके अपने जीवन को सफल बनाते हैं।

स्वतंत्रता से पूर्व के समाचार-पत्र- देश को स्वतंत्र कराने में भी समाचार-पत्रों का अतिविशिष्ट स्थान है। तिलक के 'मराठा' तथा 'केसरी' पत्रों ने सोये हुए भारतवासियों को जगाया। उनमें नवीन प्राण प्रतिष्ठा की। अँग्रेजों के शोषण तथा अत्याचार को देश के समक्ष निडरता से उजागर किया। ऐसे करने में उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन वे अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए। युद्ध एवं विपत्ति में समाचार-पत्र- युद्ध एवं विपत्ति के समय समाचार-पत्रों का दायित्व बहुत बढ़ जाता है। प्राकृतिक प्रकोप किसी के हाथ की बात नहीं है। ये सब प्रकृति के प्रकोपस्वरूप घटित होते हैं। सूखा तथा बाढ़ जन-जीवन को तहस-नहस कर

देते हैं। समाचार-पत्र इन सब प्राकृतिक प्रकोपों का विस्तृत विवरण प्रकाशित करते हैं। इसको पढ़कर जन-सेवी संस्थाएँ उन स्थानों पर यथा सम्भव सहायता पहुँचाती हैं। सहायता कोष के लिए भी समाचार-पत्र अपील छापते हैं।

हानियाँ- समाचार-पत्रों से जहाँ इतने लाभ हैं, साथ ही यदा-कदा हानियाँ भी हो जाती हैं। कल्पित तथा झूठे समाचार जनसामान्य को भुलावे में डाल देते हैं। यदाकदा इनके फलस्वरूप साम्प्रदायिक दंगों का भी जन्म होता है।

जनता का सम्बन्ध- राष्ट्र विरोधी शक्तियाँ भी प्रत्येक राष्ट्र में रहती हैं। भ्रष्टाचार, शोषण तथा अन्याय में लिप्त मानव स्वयं के हित को राष्ट्र से ऊपर ठहराता है। इसी कारण वह येन-केन-प्रकोरण धन संचय करने में लिप्त रहता है। समाचार-पत्र ऐसे नकाबपोशों को जनता के समक्ष उजागर करता है। इससे राष्ट्र एक बड़ी विपत्ति से मुक्त हो जाता है। समाचार-पत्र को किसी सम्प्रदाय, राजनीतिक दल अथवा धनिकों के हाथ खिलौना नहीं बनना चाहिए। सरकार तथा जनता के मध्य की कड़ी भी अखबार होते हैं। समाचार-पत्रों के माध्यम से सरकार जनता की भावनाओं से अवगत होती है। इसलिए यह परमावश्यक है कि समाचारपत्रों को निष्पक्ष तथा यथार्थ घटनाओं को अपने अंक में प्रकाशित करना चाहिए। जनता के लिए समाचारपत्र ही प्रमुख सम्बल है।

उपसंहार- समाचार-पत्र प्रत्येक राष्ट्र के सजग पहरेदार हैं। यदि ये जागरूक नहीं होंगे, तो देश मृतक तुल्य हो जायेगा। इसी हेतु यह परमावश्यक है कि समाचार-पत्र सही तथा निष्पक्ष समाचारों को प्रकाशित करें। कल्पित तथा झूठे समाचार देश को साम्प्रदायिकता की आग में झोंक देते हैं। उससे तोड़-फोड़ तथा रक्तपात होता है। जन-मानस में द्वेष तथा मालिन्य के बीज पनप जाते हैं। ऐसे समाचार पत्र तो राष्ट्र-विरोधी होते हैं। अतः यह परमावश्यक है कि समाचार-पत्र अपने दायित्व का निष्पक्षता तथा ईमानदारी से निर्वाह करें, तभी राष्ट्र सम्पन्न तथा खुशहाल होगा तथा तभी विश्व-बिन्धुत्व के भाव मुखरित होंगे।

(ब) निम्नलिखित में से किसी एक विषय की रूपरेखा लिखिए-

(i) विद्यार्थी और अनुशासन, (ii) पुस्तकालय, (iii) विद्यालय का वार्षिकोत्सव।

उत्तर- रूपरेखा- (i) प्रस्तावना, (ii) अनुशासन एवं शिक्षा संस्कार, (iii) विद्यार्थी से आशाएँ, (iv) छात्रों में अनुशासन (v) उसका निवारण।